श्रीमद् राजचन्द्र

ई. सन् १८४७ के संक्षोभकाल में शक्तिशाली अंग्रेजी राज्य सत्ता ने भारत के राजनैतिक, आर्थिक एवं नैतिक स्तर को कुचल डाला। लेकिन ई. सन् १८६० के पश्चात् अगले दस वर्षों में ही देश में सुधार और धर्मोद्धार के बीज बोने का प्रारम्भ हो गया। उस जागृति काल में श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे तेजस्वी और ज्ञानावतार श्रीमद् राजचन्द्र जैसे अध्यात्मयोगी का जन्म हुआ था।

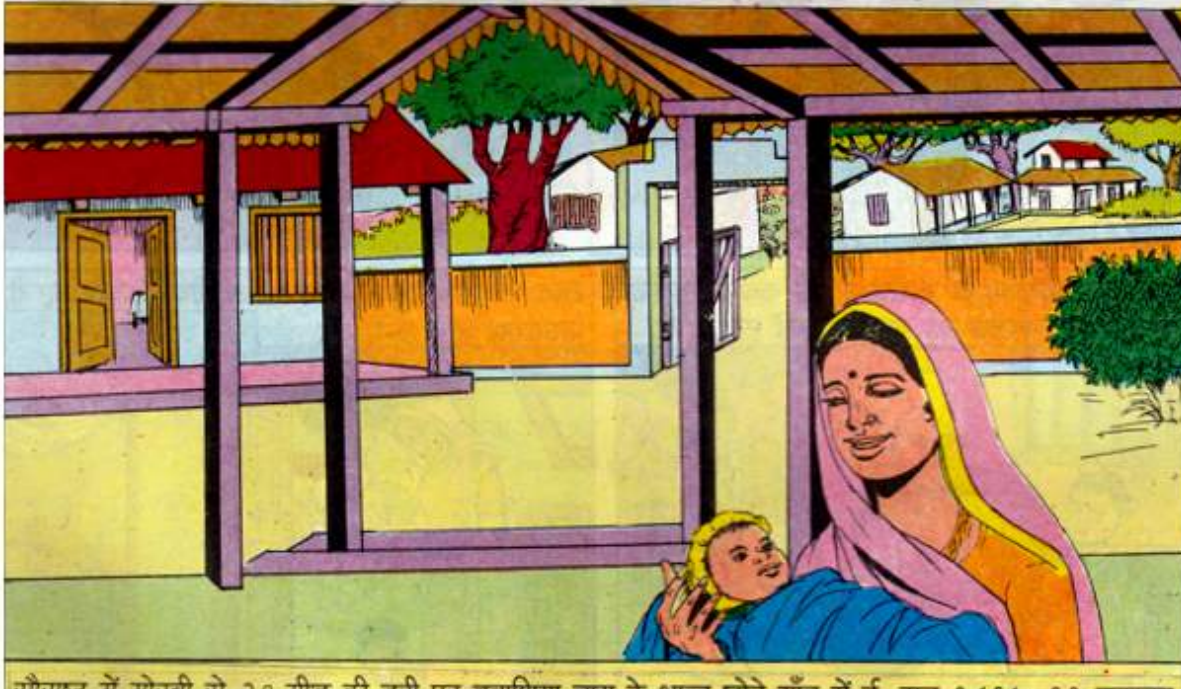

सौराष्ट्र में मोरबी से २० मील की दूरी पर ववाणिया नाम के शान्त छोटे गाँव में ई. सन् १८६७, ११ नवम्बर, रविवार के दिन श्रीमद् राजचन्द्र (रायचन्द) का जन्म एक बनिक परिवार में हुआ था। पिता रवजी। भाई मेहता वैष्णव थे लेकिन माता देवबाई जैन संस्कार लेकर आई थी। पश्चात् श्रीमद् की चार बहिनें और छोटा भाई मनसुख भी थे।

बचपन में रायचन्द्र के मन में अनोखी कल्पनाएँ हुआ करती थीं।

जैसे–राज-राजेश्वर बनने की इच्छा।

कभी-कभी उससे बिल्कुल विपरीत, निस्पृही संत बनने की अभिलाषा हुआ करती थी।

इस मंथन से उनका मन सरल एवं शुद्ध बन गया।

वे भौतिक सुख की इच्छाओं से दूर हो गये।

हमारे राजचन्द्र को खाने-पीने या पहनने-ओढ़ने की कोई परवाह नहीं है। इस अल्प आयु में ही उसमें कितना वैराग्य भरा हुआ है।

राजचन्द्र को अपने दादा श्री पंचाण भाई से बहुत स्नेह था। वे उसे नित्य अपने साथ श्रीकृष्ण मन्दिर ले जाते थे।

दादा उसे श्रीकृष्ण के चमत्कारों की कथाएँ सुनाया करते। नन्हा बालक बड़े चाव से उन्हें सुनता था।

श्री पंचाण भाई ने उसके मन में धार्मिक भावनाएँ कूट-कूट कर भर दीं।

सात वर्ष की आयु में माता का आशीर्वाद प्राप्त कर वे पाठशाला जाने लगे।

राजचन्द्र को एक बार पढ़ने से ही पाठ समझ में आ जाता था और उस पाठ को ज्यों का त्यों शब्दशः सुना देते थे।

कालान्तर में उसने अपने अध्यापक को उन्हीं पाठों के गहन अर्थ समझाए।

वे जब सात वर्ष के थे। तब एक दिन अमीचन्द नाम के एक महानुभाव की साँप काटने से मृत्यु हो गई। वे राजचन्द्र से बहुत प्रेम रखते थे।

यह समाचार सुनते ही वे अपने प्यारे दादा के पास दौड़ आए।

बालक को डर लगेगा इस कारण से वे जवाब को टालने लगे लेकिन अन्त में थककर कहना पड़ा कि–

इस उत्तर से वे बेचैन हो उठे। चुपके से बाहर निकलकर श्मशान के निकट जा पहुँचे। वहाँ दो डाल वाले बबूल के पेड़ पर चढ़कर खड़े हो गये, जहाँ से श्मशान दिखाई देता था। वे सोचने लगे–

मन, वचन, काया की स्थिरता पूर्वक वे गहन विचार में निमग्न हो गये।